बाल दिवस विशेष

बूंदी का पीएमश्री झापड़ी स्कूल बना मिसाल... दुकान का नाम है शॉप ऑफ ऑनेस्टी

न ताला, न पहरेदार...बच्चों की ईमानदारी से चलती दुकान

गुंजन बाकलीवाल
patrika.com

बूंदी . दुकान खुली है, सामान करीने से सजा है और रेट लिस्ट भी लगी है। सामने एक खुला डिब्बा रखा है, जिसमें कोई भी बच्चा अपनी मर्जी से पैसे डाल सकता है। चाहें तो सामान उधार भी ले सकता है। लेकिन यहां न कोई दुकानदार है, न पहरेदार और न ही हिसाब मांगने वाला। इसके बावजूद न सामान गायब होता है और न पैसों का हिसाब बिगड़ता है। उधार लेने वाले बच्चे अगले दिन खुद पैसे जमा कराने पहुंच जाते हैं। यह किसी कहानी की कल्पना नहीं, बल्कि बूंदी के पीएमश्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झापड़ी की हकीकत है। यहां दुकान ताले से नहीं, बच्चों की ईमानदारी से चलती है। शिक्षिका अनुराधा जैन की पहल पर शुरू हुई इस अनूठी व्यवस्था का नाम है 'शॉप ऑफ ऑनेस्टी' यानी ईमानदारी की दुकान। पढ़ें **न ताला** @ पेज 02

जेब खाली हो तो भी स्टेशनरी लेकर जा सकते हैं बच्चे, अगले दिन खुद लाकर देते हैं पैसे; हर महीने एक विद्यार्थी संभालता है दुकान और हिसाब-किताब



बूंदी . झापड़ी स्कूल में ईमानदारी की दुकान।

जेब खाली तो भी नहीं रुकती पढ़ाई

दुकान की खासियत यह है कि किसी बच्चे के पास पैसे नहीं हैं तो भी उसे मायूस नहीं लौटना पड़ता। वह जरूरत का सामान ले जा सकता है और अगले दिन खुद आकर पैसे जमा कर देता है। न किसी गारंटी की जरूरत है और न उधार मांगने की झिझक।

दरअसल, स्कूल के ज्यादातर बच्चों के अभिभावक मजदूर, किसान और छोटे व्यापारी हैं। वे सुबह काम पर निकल जाते हैं। ऐसे में कई बार बच्चों को स्टेशनरी नहीं मिल पाती थी। इसी समस्या के समाधान के लिए यह पहल की।

भरोसा मिला तो बच्चों ने भी निभाया... प्रधानाचार्य जगन प्रसाद का कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को अच्छा इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। इस दुकान में बच्चों को ईमानदारी का पाठ पढ़ाया नहीं जाता, बल्कि उस पर अमल करने का मौका दिया जाता है।